www.ijarp.com ISSN 2456-9992 Page: 01-09

International Journal Advanced Research Publications

Review Article

Volume: 02
Issue: 07

व्यक्ति में मूल्यों के विकास में सामाजिक कारकों की भूमिका

***डॉ. दिनेश कुमार मौर्य**

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र विभाग, एम.एल.के.पी.जी. कॉलेज, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

Article Received: 20 June 2026, Article Revised: 10 July 2026, Published on: 30 July 2026

***Corresponding Author: डॉ. दिनेश कुमार मौर्य**
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र विभाग, एम.एल.के.पी.जी. कॉलेज, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश
Doi: https://doi-doi.org/101555/ijarp.6787

सार (ABSTRACT)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका व्यक्तित्व, व्यवहार तथा मूल्य समाज के वातावरण में ही विकसित होते हैं। मूल्य वे आदर्श, मान्यताएँ एवं सिद्धांत हैं जो व्यक्ति के आचरण को दिशा प्रदान करते हैं तथा उसे उचित-अनुचित, सत्य-असत्य और न्याय-अन्याय का विवेक कराते हैं। व्यक्ति जन्म से मूल्य लेकर नहीं आता, बल्कि परिवार, विद्यालय, समाज तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से उन्हें सीखता और आत्मसात करता है। इसलिए मूल्यों के विकास में सामाजिक कारकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। मानव जीवन में मूल्यों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। मूल्य व्यक्ति के विचारों, भावनाओं, व्यवहार तथा निर्णयों को दिशा प्रदान करते हैं। सत्य, ईमानदारी, सहयोग, सहिष्णुता, न्याय, अनुशासन, करुणा, प्रेम, त्याग और उत्तरदायित्व जैसे मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। व्यक्ति में मूल्यों का विकास केवल व्यक्तिगत अनुभवों से नहीं होता, बल्कि उसके सामाजिक परिवेश का भी उस पर गहरा प्रभाव पड़ता है। परिवार, विद्यालय, मित्र समूह, समुदाय, धर्म, संस्कृति, जनसंचार माध्यम तथा सामाजिक संस्थाएँ व्यक्ति के मूल्यों के निर्माण और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

मुख्य शब्द – मूल्य, संस्कृति, सहिष्णुता, अनुशासन, उत्तरदायित्व,परिवार, विद्यालय, मित्र समूह।

मूल्य का अर्थ

मूल्य उन आदर्शों, मान्यताओं और सिद्धांतों को कहा जाता है जो व्यक्ति के व्यवहार को उचित-अनुचित, अच्छा-बुरा तथा वांछनीय-अवांछनीय के आधार पर दिशा प्रदान करते हैं। मूल्य व्यक्ति के

चरित्र और व्यक्तित्व के आधार होते हैं। एक मूल्यवान व्यक्ति न केवल अपने हितों के प्रति जागरूक होता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को भी समझता है।

मूल्य की अवधारणा

मूल्य वे आदर्श एवं मानक हैं जिनके आधार पर व्यक्ति अपने व्यवहार, निर्णय एवं जीवन-शैली का निर्धारण करता है। सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, सहयोग, अनुशासन, सहिष्णुता, करुणा, समानता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुण मानवीय मूल्यों के प्रमुख उदाहरण हैं।

मूल्य वे **आदर्श, सिद्धांत, मान्यताएँ और मानदंड** हैं जो व्यक्ति के व्यवहार, विचारों और निर्णयों को सही–गलत तथा उचित–अनुचित के आधार पर दिशा प्रदान करते हैं।

सरल शब्दों में

मूल्य व्यक्ति के जीवन में यह निर्धारित करते हैं कि उसे **कैसे व्यवहार करना चाहिए और कौन-सा आचरण उचित है।**

उदाहरण: सत्य, ईमानदारी, प्रेम, सहयोग, त्याग, अनुशासन, सहिष्णुता, न्याय और करुणा आदि व्यक्ति के प्रमुख मूल्य हैं।

1. राधाकमल मुखर्जी के अनुसार

"मूल्य वे सामाजिक रूप से स्वीकृत इच्छाएँ और लक्ष्य हैं, जो व्यक्ति के व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं।"

2. क्लाइड क्लकहोहन (Clyde Kluckhohn) के अनुसार

"मूल्य किसी व्यक्ति या समूह की उस धारणा का प्रतिनिधित्व करते हैं कि क्या वांछनीय, उचित या अच्छा है।"

3. आर. बी. पेरी (R. B. Perry) के अनुसार

"मूल्य किसी वस्तु में रुचि या उसके प्रति आकर्षण का विषय है।"

4. जॉन डीवी (John Dewey) के अनुसार

"मूल्य का संबंध उन वस्तुओं, उद्देश्यों और गतिविधियों से है जिन्हें मनुष्य वांछनीय और महत्वपूर्ण मानता है।"

5. ई. एस. ब्राइटमैन (E. S. Brightman) के अनुसार

"मूल्य वह अनुभव है जिसके द्वारा व्यक्ति किसी वस्तु, विचार या उद्देश्य को अच्छा, महत्वपूर्ण और वांछनीय मानता है।"

संक्षेप में: मूल्य वे आदर्श और मान्यताएँ हैं जो व्यक्ति के व्यवहार, विचारों और जीवन-निर्णयों को दिशा प्रदान करती हैं।

सामाजिक कारकों का अर्थ

सामाजिक कारक उन सभी व्यक्तियों, संस्थाओं, समूहों और परिस्थितियों को कहा जाता है जो व्यक्ति के सामाजिक जीवन को प्रभावित करते हैं। व्यक्ति जन्म से ही सामाजिक वातावरण में रहता है और निरंतर सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से सीखता है। इसी प्रक्रिया के द्वारा उसमें विभिन्न सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों का विकास होता है।

1. परिवार की भूमिका

परिवार व्यक्ति के मूल्य-विकास का सबसे पहला और सबसे प्रभावशाली सामाजिक कारक है। बालक अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में परिवार से ही भाषा, व्यवहार, अनुशासन, प्रेम, सहयोग, सम्मान और नैतिकता सीखता है। माता-पिता का व्यवहार बालक के लिए प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करता है। परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है। बालक सबसे पहले माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों से व्यवहार करना सीखता है। प्रेम, सहयोग, अनुशासन, सम्मान, त्याग, सेवा तथा नैतिकता जैसे मूल्यों का प्रारंभिक विकास परिवार में ही होता है। माता-पिता का आचरण बच्चों के लिए आदर्श बन जाता है।

यदि परिवार में सत्य, ईमानदारी, अनुशासन, प्रेम और सहयोग का वातावरण होता है, तो बालक में भी इन मूल्यों का विकास होता है। इसके विपरीत, परिवार में हिंसा, झूठ, भेदभाव और असहिष्णुता का वातावरण बालक के व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। इस प्रकार परिवार मूल्य-शिक्षा की प्रथम पाठशाला है।

2. विद्यालय की भूमिका

विद्यालय व्यक्ति के मूल्य-विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। विद्यालय केवल ज्ञान प्रदान करने वाली संस्था नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण भी करता है। विद्यालय में अनुशासन, समय-पालन, सहयोग, नेतृत्व, समानता, सहिष्णुता, राष्ट्रप्रेम और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का विकास किया जाता है।हम सभी जानते है कि विद्यालय समाज का लघुरूप है। यहाँ शिक्षक, सहपाठी, पाठ्यक्रम, सहगामी गतिविधियाँ तथा विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों में अनुशासन, समयपालन, सहयोग, नेतृत्व, सहिष्णुता, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण तथा राष्ट्रीय एकता जैसे मूल्यों का विकास करते हैं। शिक्षक का आदर्श व्यक्तित्व विद्यार्थियों के मूल्य निर्माण में अत्यंत प्रभावशाली होता है।

3. शिक्षक की भूमिका

शिक्षक का व्यक्तित्व विद्यार्थियों को अत्यधिक प्रभावित करता है। शिक्षक का व्यवहार, निष्पक्षता, ईमानदारी और संवेदनशीलता विद्यार्थियों के लिए आदर्श प्रस्तुत करते हैं। पाठ्यक्रम, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, खेल, प्रार्थना सभा, सामूहिक कार्य तथा सामाजिक सेवा के कार्यक्रम भी विद्यार्थियों में मूल्य विकसित करने में सहायक होते हैं।

4. मित्र समूह की भूमिका

किशोरावस्था में मित्र समूह व्यक्ति के व्यवहार और मूल्यों को अत्यधिक प्रभावित करता है। व्यक्ति अपने मित्रों के विचारों, आदतों और व्यवहार से प्रभावित होता है। अच्छे मित्रों का समूह सहयोग, अनुशासन, परिश्रम, ईमानदारी और सकारात्मक सोच जैसे मूल्यों को विकसित कर सकता है। मित्र एवं सहपाठी व्यक्ति के व्यवहार और मूल्यों को प्रभावित करते हैं। अच्छे मित्र सकारात्मक सोच, सहयोग, प्रतिस्पर्धा की स्वस्थ भावना तथा सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित करते हैं, जबकि अनुचित संगति नकारात्मक मूल्यों को जन्म दे सकती है। इसके विपरीत, नकारात्मक संगति व्यक्ति में अनुशासनहीनता, असामाजिक व्यवहार और गलत आदतों का विकास कर सकती है। इसलिए व्यक्ति के मूल्य-विकास में संगति का विशेष महत्व है।

5. संस्कृति और परंपराओं की भूमिका

संस्कृति व्यक्ति के जीवन-मूल्यों को गहराई से प्रभावित करती है। प्रत्येक समाज की अपनी परंपराएँ, रीति-रिवाज, मान्यताएँ और आदर्श होते हैं। व्यक्ति इन्हीं सांस्कृतिक परंपराओं के माध्यम से बड़ों का सम्मान, अतिथि-सत्कार, सहयोग, त्याग, सहिष्णुता और सामूहिकता जैसे मूल्यों को सीखता है। समाज की संस्कृति, रीति-रिवाज, परंपराएँ, धार्मिक उत्सव तथा लोकाचार व्यक्ति को सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित कराते हैं। ये व्यक्ति में सामाजिक एकता, सहिष्णुता, बंधुत्व तथा सांस्कृतिक गौरव की भावना विकसित करते हैं।

भारतीय संस्कृति में सत्य, अहिंसा, करुणा, त्याग, सेवा, सहिष्णुता और "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसे मूल्यों को विशेष महत्व दिया गया है। ये मूल्य व्यक्ति के सामाजिक और नैतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

6. धर्म और आध्यात्मिक संस्थाओं की भूमिका

धर्म व्यक्ति को नैतिकता, सत्य, करुणा, प्रेम, सेवा और मानवता का संदेश देता है। धार्मिक एवं आध्यात्मिक शिक्षाएँ व्यक्ति को अच्छे और बुरे कार्यों के बीच अंतर समझने में सहायता करती हैं। धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्थाएँ व्यक्ति में सत्य, अहिंसा, करुणा, दया, सेवा, परोपकार तथा आत्मसंयम जैसे नैतिक मूल्यों का विकास करती हैं। वे व्यक्ति को नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करती हैं।

विभिन्न धार्मिक परंपराएँ मानवता, सत्य, प्रेम, सेवा और परोपकार जैसे सार्वभौमिक मूल्यों पर बल देती हैं। धार्मिक संस्थाएँ यदि सकारात्मक और मानवीय दृष्टिकोण अपनाएँ, तो वे व्यक्ति में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

7. समुदाय और पड़ोस की भूमिका

व्यक्ति जिस समुदाय और पड़ोस में रहता है, उसका उसके मूल्य-विकास पर प्रभाव पड़ता है। पड़ोस में रहने वाले लोगों के व्यवहार, सामाजिक संबंध और सामुदायिक गतिविधियाँ व्यक्ति को प्रभावित करती हैं।

सामुदायिक कार्यों, सामाजिक कार्यक्रमों और सामूहिक गतिविधियों में भाग लेने से व्यक्ति में सहयोग, सहभागिता, नेतृत्व, सामाजिक उत्तरदायित्व और सामूहिक भावना का विकास होता है।

8. सामाजिक संस्थाओं की भूमिका

विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ जैसे परिवार, विद्यालय, धार्मिक संस्थाएँ, सामाजिक संगठन और स्वयंसेवी संस्थाएँ व्यक्ति के मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये संस्थाएँ व्यक्ति को समाज के नियमों, आदर्शों और उत्तरदायित्वों से परिचित कराती हैं। सामाजिक सेवा, रक्तदान, पर्यावरण संरक्षण, गरीबों की सहायता तथा जन-जागरूकता अभियानों में भाग लेने से व्यक्ति में मानवतावादी और सामाजिक मूल्यों का विकास होता है।

9. जनसंचार माध्यमों की भूमिका

आज के आधुनिक युग में टेलीविजन, समाचार पत्र, इंटरनेट और सोशल मीडिया व्यक्ति के विचारों और मूल्यों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण साधन बन गए हैं। सकारात्मक एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रम व्यक्ति में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सामाजिक जागरूकता, राष्ट्रप्रेम और मानवता जैसे मूल्यों का विकास कर सकते हैं। समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट तथा सोशल मीडिया आज मूल्य निर्माण के महत्वपूर्ण माध्यम बन गए हैं। सकारात्मक एवं प्रेरणादायक सामग्री अच्छे मूल्यों का विकास करती है, जबकि हिंसात्मक, भ्रामक अथवा अनैतिक सामग्री नकारात्मक प्रभाव भी डाल सकती है। इसलिए मीडिया का विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है।

हालाँकि, नकारात्मक और हिंसात्मक सामग्री व्यक्ति के व्यवहार और मूल्यों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इसलिए जनसंचार माध्यमों का विवेकपूर्ण और संतुलित उपयोग आवश्यक है।

10. सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों की भूमिका

व्यक्ति की सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ भी उसके मूल्यों के विकास को प्रभावित करती हैं। गरीबी, बेरोजगारी, असमानता और सामाजिक भेदभाव जैसी परिस्थितियाँ व्यक्ति के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकती हैं। स्वयंसेवी संगठन, युवा क्लब, स्काउट-गाइड, राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS),

राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) तथा विभिन्न सामाजिक संगठन व्यक्ति में सेवा, नेतृत्व, अनुशासन, सहयोग एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का विकास करते हैं।

इसके विपरीत, समानता, सामाजिक न्याय, सुरक्षा और अवसरों की उपलब्धता व्यक्ति में सकारात्मक सामाजिक मूल्यों का विकास करती है। समाज में न्यायपूर्ण वातावरण व्यक्ति को सहयोगी, संवेदनशील और उत्तरदायी बनाने में सहायक होता है।

11. सामाजिक आदर्शों और नेतृत्व की भूमिका

समाज के आदर्श व्यक्ति के लिए प्रेरणा का स्रोत होते हैं। महान व्यक्तियों, समाजसेवियों, स्वतंत्रता सेनानियों और राष्ट्रनिर्माताओं का जीवन व्यक्ति को सत्य, त्याग, सेवा, साहस और देशभक्ति जैसे मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है। लोकतांत्रिक समाज व्यक्ति को समानता, स्वतंत्रता, न्याय, मानवाधिकार तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का अभ्यास करने का अवसर प्रदान करता है। स्वस्थ सामाजिक वातावरण व्यक्ति के नैतिक विकास को प्रोत्साहित करता है। सामाजिक नेतृत्व भी मूल्य-विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ईमानदार और जिम्मेदार नेतृत्व समाज में सकारात्मक मूल्यों को बढ़ावा देता है। व्यक्ति सामाजिक अंतःक्रिया के माध्यम से अनेक अनुभव प्राप्त करता है। विभिन्न लोगों से मिलना, सहयोग करना, समस्याओं का समाधान करना तथा सामाजिक परिस्थितियों का सामना करना व्यक्ति के मूल्यों को विकसित करता है।

सामाजिक अनुभव व्यक्ति में सहिष्णुता, समायोजन, सहानुभूति, सहयोग और समस्या-समाधान जैसे मूल्यों का विकास करते हैं। इस प्रकार सामाजिक जीवन व्यक्ति के मूल्य-विकास की निरंतर प्रक्रिया है।

वर्तमान समय में सामाजिक चुनौतियाँ

अतः वर्तमान समय में व्यक्ति में मूल्यों के विकास के सामने परिवार में परिवर्तन, भौतिकवाद, डिजिटल मीडिया का दुरुपयोग, सामाजिक असमानता, प्रतिस्पर्धा, नैतिक आदर्शों का संकट और सांस्कृतिक संक्रमण जैसी अनेक सामाजिक चुनौतियाँ हैं। इन चुनौतियों का समाधान परिवार, विद्यालय, समाज और मीडिया के सामूहिक प्रयासों से ही संभव है। मूल्यआधारित शिक्षा-, सकारात्मक पारिवारिक वातावरण, आदर्श सामाजिक व्यवहार, सामाजिक सहभागिता और डिजिटल साक्षरता के माध्यम से व्यक्ति में ईमानदारी, सहिष्णुता, सहयोग, न्याय, मानवता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

व्यक्ति में मूल्यों के विकास में सामाजिक कारकों की भूमिका को स्पष्ट करने के लिए इस प्रकार के उदाहरण दिए जा सकते हैं—

- **परिवार का प्रभाव:** भगवान राम ने अपने पिता राजा दशरथ की आज्ञा का पालन करते हुए राजसिंहासन का त्याग किया और चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार किया। यह उदाहरण परिवार से प्राप्त आज्ञापालन, त्याग, कर्तव्यनिष्ठा और मर्यादा जैसे मूल्यों को दर्शाता है।
- व्यक्ति में मूल्यों के विकास में सामाजिक कारकों की भूमिका को स्पष्ट करने के लिए **राजा हरिश्चंद्र** का भी उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है। उन्होंने सत्य और वचनपालन के आदर्शों की रक्षा के लिए अपना राज्य, धन-संपत्ति तथा व्यक्तिगत सुख तक त्याग दिया। यह उदाहरण व्यक्ति के जीवन में सत्यनिष्ठा, त्याग, कर्तव्यपरायणता और नैतिक मूल्यों के विकास को दर्शाता है।
- व्यक्ति में मूल्यों के विकास में सामाजिक कारकों की भूमिका को स्पष्ट करने के लिए **महर्षि दधीचि** का उदाहरण दिया जा सकता है। उन्होंने देवताओं और समस्त लोककल्याण की रक्षा के लिए अपने शरीर की अस्थियों का दान कर दिया। यह उदाहरण व्यक्ति में त्याग, परोपकार, सेवा, त्यागभावना और लोककल्याण जैसे उच्च नैतिक मूल्यों के विकास को दर्शाता है।
- **माता-पिता का प्रभाव:** श्रवण कुमार ने अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा और तीर्थयात्रा की इच्छा पूरी करने के लिए उन्हें कंधे पर बैठाकर यात्रा कराई। यह मातृ-पितृ भक्ति, सेवा और कर्तव्यपरायणता का उदाहरण है।
- **शिक्षक का प्रभाव:** एक आदर्श शिक्षक अपने आचरण, अनुशासन और नैतिक व्यवहार के माध्यम से विद्यार्थियों में **सत्यनिष्ठा, अनुशासन, सहयोग और जिम्मेदारी** जैसे मूल्यों का विकास करता है।
- **समाज का प्रभाव:** महात्मा गांधी के जीवन में सत्य और अहिंसा जैसे मूल्यों का विकास सामाजिक एवं नैतिक विचारों से प्रभावित हुआ। उन्होंने इन मूल्यों को अपने जीवन का आधार बनाया और समाज को भी इनका पालन करने के लिए प्रेरित किया।
- **मित्र समूह का प्रभाव:** अच्छे मित्र व्यक्ति में सहयोग, सहानुभूति, ईमानदारी और सकारात्मक सोच जैसे मूल्यों का विकास करते हैं, जबकि नकारात्मक संगति व्यक्ति के व्यवहार और मूल्यों पर विपरीत प्रभाव डाल सकती है।
- **सांस्कृतिक एवं धार्मिक परंपराओं का प्रभाव:** भारतीय संस्कृति में 'अतिथि देवो भवः', 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसे आदर्श व्यक्ति में अतिथि-सत्कार, विश्वबंधुत्व और परोपकार की भावना का विकास करते हैं।

मूल्य विकास के लिए सुझाव

व्यक्ति के मूल्यों का विकास एक निरंतर सामाजिक प्रक्रिया है। परिवार, विद्यालय, मित्रसमूह-, समुदाय, मीडिया तथा अन्य सामाजिक संस्थाएँ व्यक्ति के मूल्यनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वर्तमान - सामाजिक चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए मूल्य विकास के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं—

- परिवार में नैतिक मूल्यों एवं सकारात्मक सोच पर आधारित स्वस्थ वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए।
- विद्यालयों में मूल्य-आधारित शिक्षा को प्रभावी एवं व्यवस्थित रूप से लागू किया जाना चाहिए।
- शिक्षकों को अपने आचरण एवं व्यवहार के माध्यम से विद्यार्थियों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।
- सामाजिक एवं सामुदायिक सेवा गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाए।
- मीडिया का जिम्मेदारीपूर्ण एवं रचनात्मक उपयोग किया जाए।
- भारतीय संस्कृति एवं संविधान में निहित मानवीय मूल्यों का प्रचार-प्रसार किया जाए।
- विद्यार्थियों को सहयोग, सहिष्णुता, पर्यावरण संरक्षण तथा राष्ट्रीय एकता जैसे मूल्यों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाए।

अतः व्यक्ति में मूल्यों का विकास केवल उपदेशों से नहीं, बल्कि सकारात्मक सामाजिक वातावरण, आदर्श व्यवहार, अनुभवात्मक शिक्षा और निरंतर सामाजिक सहभागिता से संभव है। परिवार को संस्कारों का केंद्र, विद्यालय को मूल्य-आधारित शिक्षा का केंद्र और समाज को सकारात्मक व्यवहार का आदर्श बनना होगा। इन सामूहिक प्रयासों से व्यक्ति में ईमानदारी, सहिष्णुता, सहयोग, न्याय, मानवता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

उपसंहार

अंततः यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति में मूल्यों का विकास एक निरंतर सामाजिक प्रक्रिया है। परिवार मूल्य-विकास की आधारशिला रखता है, विद्यालय उसे व्यवस्थित दिशा प्रदान करता है, मित्र समूह और समुदाय उसे प्रभावित करते हैं तथा संस्कृति, धर्म, सामाजिक संस्थाएँ और जनसंचार माध्यम उसके मूल्यों को निरंतर आकार देते हैं।

यदि व्यक्ति को सकारात्मक, नैतिक और मानवीय सामाजिक वातावरण प्राप्त हो, तो उसमें सत्य, ईमानदारी, सहयोग, सहिष्णुता, करुणा, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे उच्च मूल्यों का विकास होता है। अतः व्यक्ति के मूल्य-विकास के लिए केवल व्यक्तिगत प्रयास पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि

परिवार, विद्यालय और संपूर्ण समाज का सामूहिक प्रयास आवश्यक है। वास्तव में, **एक मूल्यवान समाज का निर्माण मूल्यवान व्यक्तियों से और मूल्यवान व्यक्तियों का निर्माण स्वस्थ सामाजिक वातावरण से होता है।**

परिवार, विद्यालय, समाज, संस्कृति, धर्म तथा जनसंचार माध्यम मिलकर व्यक्ति के चरित्र एवं व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। यदि समाज सकारात्मक एवं मूल्यपरक वातावरण प्रदान करे, तो व्यक्ति नैतिक, उत्तरदायी एवं आदर्श नागरिक बन सकता है। इसलिए एक सशक्त, नैतिक एवं प्रगतिशील समाज के निर्माण हेतु सामाजिक संस्थाओं द्वारा मूल्य शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मुखर्जी, राधाकमल. (1965) मूल्यों की सामाजिक संरचना. नई दिल्ली: एस. चंद एंड कंपनी।
2. क्लकहोहन, क्लाइड. (1951) कार्रवाई के सिद्धांत में मूल्य और मूल्य-अभिविन्यास। टी. पार्सन्स और ई. ए. शिल्स (सं.) में, कार्रवाई के एक सामान्य सिद्धांत की ओर। कैम्ब्रिज: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. डुई, जॉन. (1916) लोकतंत्र और शिक्षा. न्यूयॉर्क: मैकमिलन.
4. दुर्कीम, एमिल। (1956)। शिक्षा एवं समाजशास्त्र. न्यूयॉर्क: फ्री प्रेस.
5. बंडुरा, अल्बर्टा। (1977)। सामाजिक शिक्षण सिद्धांत। एंगलवुड क्लिफ्स, एनजे: प्रेंटिस-हॉल।
6. कोहलबर्ग, लॉरेंस। (1981). नैतिक विकास का दर्शन: नैतिक चरण और न्याय का विचार। सैन फ्रांसिस्को: हार्पर एंड रो।
7. पियाजे, जीन. (1932) बच्चे का नैतिक फैसला। लंदन: रूटलेज और केगन पॉल।
8. वाईगोत्स्की, एल. एस. (1978)। समाज में मन: उच्च मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का विकास। कैम्ब्रिज, एमए: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. शर्मा, आर. ए. (विभिन्न संस्करण). आरंभिक संस्थान. अंतिम: आर. लाल किताब।
10. मथुरा, एस. एस. (विभिन्न संस्करण). शिक्षाशास्त्र. आगरा: अग्रवाल प्रकाशन।
11. अग्रवाल, जे. सी. (विभिन्न संस्करण). आरंभिक संस्थान. नई दिल्ली: विकास प्रकाशन गृह।
12. राष्ट्रीय स्टार्टअप और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी)। (2005)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की परिभाषा (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005)। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
13. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: भारत सरकार।